# धालमा मभा्डात 

मिसषाथव

## सिषां दिध वृवप्रती विछें ठगीं गटी？

fम देले ीिमँधां हिस टिव यूबग्त टे đैके हे भा खां सीडी đै। टिर
 दाल्या ैै भव उर भर पर वाठु भव्यत वठते थुठ डिभग् घठ डिभान कै，मठ टिम ठाल्ट च्रुत मीमल वउटा चै－＇पंटि

 गत：टिवरां हिच मवाने सा भग्टा मुलें



 से बौले घट गठे गऊ1．．．．．民िगरां टी


 भैउरी भुषाप्लहउ वउटे Ј वि उवैवी ही वार्दट टा हेठ माठा बगतर हेगे
 ने fिदी मु प्रठत्वीभां द्वेभउलघ उस्लं

## हिम भव दिच

－विम् उठटाभि दिचनी उहत 3
－विध्येट मगणिउव भिलटी 4
－मूरीट घग्रु ग्रतण मिभur．．． 5
－Motherly Affection 7
－ 100 मएू यठिएां 10
－मघट निम्ना\＆क्भा 11

त्रे fी चुंदे छुठ गत तै निवा देला ऐेसे गत उंड निटे वे नांट्टे गठ। भायटा फहरट से लेंटे गठ，निधी भम्बलां टी पठट्रा ठर्गीं रठटे। टिम पूरान टे वाभ गैले हिच भैप सी उत्वी वृ वरी ने，विछिंक थैव सी उतँवी वेहल बुठवमी ठाल वे मवटी चै，
 द्चित रठीं वे मवटी।


 मिंधी से म्नरत वृम्नग्र ररीं，मवों मिख्ष उविले द्चित दिव मभझ्टे गठ वि भार्मीं गुत्व थठ गमश्万 रठ वठे गां। टिये बातर जै वि बवघम्री वठहे टाप्ले मिँबां दिध फॅट रहतन थैंट गर，मत निभुधी हा हृप्रा कर्गी
 वठते हाल्ले हें विण मी वि से उँच वठेवो

 मैने प्रैठ घी वि नित्रां टी धणिले निस मढा दूल ठुर्धी गेटी मी，थत विमे ठॉले
 भर्य क्षे वाठ घल वे fिये यठस टी











हेव भार्मीं भहिवां भाट्रीी कैमे ऐेवटे
 टे गहु，वीउां वमभं，दिभाण साग्टी देसे
 Wहेब चॉलां भैमीभां वठ गुस्तनटे गत निटृं टी बाठभfि हिस भाग्ठाज़ा रर्णी।


 इला ने टिद्वं हैवां के पठस हे भीभिउ

 टे लिबग्े वग्ठतां वठवे वृषण्ती वठते
 भजावा मार गै। उप्टी वाठराम नी हा दाव चै：－

 भां fिध्र केटं उाहित पगटाठ टुगम्ला। ठाठ हाही भामीफां भाभे तैताल्ला। मटिता वुरा मीनीके डीव धगट्रा यीव भवीटां fिवउझी 民िवू माब्


हेत गात्र ती भुज वषत वत गाटे Јగ：－

वाउलेह भाउा वाठटेद पिडा ताठटेद मभभभी थतमेमृठाः वाठटरेट मधा भविभाभ
 लाडा उठि रुभ किपटेमै ताठटेट भैड
 त्रावरेद थाग्तम थवमथठा। गृतरेद डीवधु



 गठिनयि छियता॥ चाठटेह मीवांड पूउ्ड मेलि ववि वितथ वम भुइ युथी
निन्ट एवित उता॥ गाठटेल मडिवात्र थावघूठण भठभेमठ़ गुठटेद ताठव Јवि

टिम मत्ते हा उादृ टिव है वि भग्डा， सिउा，उता，मड़रीं चेर्वी मार्ठ़ गाठटेह है।
 पूवाठ नां्टीटे उट विछिं मिमण्त टी वैप्टी वेव मार्ट्रि बातमझड च्वी वतरें वेव मवे！ भरीं हग्टी छे डेल，वर्रम के माव，चग्धी अ ठाही अं भैछा इतटे गां वि ने छिठतां से षेटे बंठ चातघग्टी मृलं भॅवसे गर उट भमीं छिवहां उैं इठरे भा्ते पठ वठरा गी हन टेंटे गां।．．．．．वी भमीं मिष गां？
 रर्गी। ने वटी भामीं तात् मिषी से मीघ्घय
 उं हुपीव रिभान तात्र है लाहीटे। ग्टट
 हपवे उ़ग्र चैठ वस्टी ठरीं，उ भमीं हग्टी గ్ గ్ गात्र ᄅे ग्रम अैं विडे हपीव मभझ्टे गां，माइा उतउयवत्त हिचि ठर्णीं वि हड़्टी，युन，मख्वां भिगां रुल लइ पहै， वेहल हिड मिपांड है，कि से वही गाण्त
 रुीं छार्दें विइ्ञा नी हेजे एा मान विषिं
 हापि भुटिभा त ताग्टी हैंः॥＂（हाठ भगत्त उृरे भ．4－22）

तात् लव यतलेव रा मााटी चै，माव

 बला वठरे गह। हेठ वसी घहल्डा रठी मिठाटे，पठ मीमाठ きे माव मड भयहे मउसूष टे गत। क्षिम अन्री हिठ्ठां टा

भउलूप रा चैदे छुम हेले दूँट। ने वेसी甘ैंो पी गत उां यवमथत कले टे हिँद्वाह्र
 माइए उस्त वक्ला जै। मख्वां ए मैँ तरूम
 पहातष त्रि घधम्नरा है। मैमाठ से तीह भाज मेँव हाम से वैटी वर，वेसी बैटी
 मुड़ड्र चै। मिधां గ़्र मुउँड् वठरा ैै：－

भागि भवड़ मैवहि पड फेले．．．．．॥

 （गछिःी मुषफली）
घिट्रां वा्वरां वतने ताठ़ ही भाठाजा मड उं मूम्रट चै，तात्र मड अं हपीव

 घषणीभिभ जै，वेपी उवळ्डीढ रठीं，हेत भमीं विधिं गात् उैं घेभुध ग़से बां। ऐेपे
 सिभावे हा मिंा ऊर्णीं इइसे उ भमीं
 चां। छाट्टी तावटाम सी वर्बिसे चर：－

मुष मघील्टी टी त्ञ अवलां हाल्ले मग्ठे मंगटे

टिर उैं टिव ऊॅठो हप हप वे ट्रॅले मैच फवाग्टर। एख टितमए्ती गठहे उंट्टीं वा्ह वग्ह बहाहर； वग्हां ट्वत हिमल थठ सग्हत हुष मतों दृपटे ताद्रा। भेते ल्लाल उभन्त टिव मॅटी；



＇मृधड हा टिव उहा निडान

＇मुॅघ मघीली तठा हित्र हृडे भण्य यम्ब मुष हैं।
－साविउव वर्लीमयं





 कियि घटे॥२₹॥（ढान－२つ）
टिम यधिजी टिष माह टॅम टैउा वै कि निबुठ यठैठा टीदे थ్రठ मझ भठहा नै। भॅБी सल उै हिढ्बइवे भठर्टः नै，fिवठा
 झैठ बैल टी फ्यॅट ३ैं रुीं इठटा，डिदें निधां है गा छग्गीरा जै，बाॅटें मीमाव टी वेटी उवलीक
以टंगो वि माइए गुण्ट सा मर्घंप वेपी पेल भमवरी ठर्गी，टिठ मड उैं ट्रीीक थेवा， सिभाता，मुधटाप्टी 亏 पतम भवष वै．उस मन्छे हिं वृठघाती भग्टेवी के से भर्मीं

 हेठ छैवे वॉल मॅं जै＂वि मिध मिधटीभंग है，डे मिषहीभां मिधां टीभां，गाठ्व हा वस्टी दिठता’।





 गाठु भालूर वै，वाठ्र यालक है，ने बु
 छमे गुठ्ठ यठभे टाडे उें बेसुष का गैचे। सेदे उाप्टी मर्मिष
 पिफाठ त्रे ही हिरेमा टॅमटे गठ，चठ विमे सी री ॉॉल चै：－




 भीठ भुवीरां भिवउड्डी निति नाहति रग्हि॥9०॥（Еतरे）

[^0]
# विम्न उठदामै घ्विचगठि कटत 



## 4

 ही सरम 3ै भवट उर मान्ती हिभव विमे ऊा विमे भग्वठ दिच लॅठा

 वि माइे मा्वे तीटत टी हैइ्इ－क्स भरीठ मरत्ठू वैषे के सा उटी चै ？भर्मी वी पटिभा
 भने उर 甘एली उां ऊर्वीं？टिव उां रर्गी वि याठ वठत देले ही भर्मीं भाधहे ठाल
 वठर सा भग्रत वी। टिव गुटीर हतव उां तर्वीं घट वे ठाि विभिए। घण्ठ वठर ला छिटेत्न वी चै टित हित्रितर रा माने
 सी माइे सीहत टी उमटीठ मग्चभहे वैषवे मभझछिंटे Јठ वि－
 भाट्दवि मे निज़ाल्ल॥ मीवित ठ उग्लति उिर मिछे गीउ॥ ने चैवग्टी मेटी भीउ। मैमे उउनि ड्रसे मीमग्वा॥ सरुु पराठछ


 विम से मगण्ने तणाड दिच इुतिभा हितसा
 मग्वी घट मरटा चै－

विम ब्रतहग्मै घितठवि बहता
भुज भुठाप डेठ मीठी वदृता
（H． 4 भैगा tert）
सेरठ मन्तर नीटट पर－यटाठष सेइत， हँछे भाठगभटाष्टिव जत घठछिट，मभात हित हिन्त्रु भाल－हतिभाटिभां यूथड वठर से सैवत हिति भडे यडी，प्रद्र्， यउती，ब्रापी－घंप्रभां से मेव हित तान्तांत
 वउत उैं घाट ही मैं टे घंयत ट्रैटे ऊठी घूलिव हॅघटे टी उड्टे उां नीटर हिभवष उस्रा विभा मभइल छग्वीटा है，विछिंवि टिव मब वैश भमइमब सीटत से विमे वैम ठरीं भाछिंटा－

वाभि ठ भान्दे स वग्र बाग्टै॥ भाधि



 ठणधि मट्राे आयहा वैदे fिय् मुभग्ता।
 （भ．9，मैंना १9）
भागटिभा डा भाल वठता हिभतष है। टिडा，प्रउत，टिमड्री，भणिक ही भैंड
 टेट सी मुषेड वत बठे Јर वि ने घेट्टीमण्हीभां वतवे पिरॅठे वीङे गये पर से भंगवात
 हिवाबां हिस स्राज्रिभा वंिभा उां घाणनें चाने विटीभां मॅठ－घतालं हीभां नॉसां वती


वा्वे वाठपमि भुने भाष्टिभा। थिउ मु मताल्ट वम्लड्य भग्डा उेते ฮ̃वि ठ भीजि

मड़ लाट्टमाठ वाली धाटिभगता भाल्ड वै भात्टे क्षय वी मेडा पित्ड दियी नरु गह्रग्टिभr॥（म．१ फैठा २8）
वउत पहग्वर मग्टवा मृद्टिता उुरा
 माब॥ तिरि वीउ डिम刀ि त नाल्टी सरुभुष थम ठగावा（म．4 भैंता 8ว） सेवत ता रा मतभर्गिभा टिवठा ठर्टी वीडा उां बैँ्र ही लेपे ठर्णी लूतारा－

 देम ॥वाि रुणन विटै ह हमटी वार्गत्ति विडे त स्रेषिil（भ．य भैवा 8ว）
भायहे हृलें वीडे गपे पत्तम－बठम से भागठ ही नटँं घव्वी ठुझेटिभां दांगा घट सांटे गत। मडा－मुमगप्टिटीभां घटावे माल्डां－ घघी मुधमरी मागिघ से या्ठ भडे रीवउर एवघ्व वठर－वगट्ठिट उैं घाभट ही सेवठ सीदत टिस घसलाध्ठ रत्री भाषींटा，
 ब्टंटी，भाथमी इताइे टॅप्टे सांसे उर，

भार－मగभाठ से सॅरत उँ घागठ ठर्टी तिवल मेे उां ट्टिय माते आम्बठ वठमांइ घट सांटे गठ। ठात्र मर्गिघ मभझाछिंटे गठ वि वगभ－यतभ $भ$ बे वठभवांइ मग्वे घैपत तुर वी गठ डे छीचो सां भीटे रैम बी मर्गीत ठाल जैञ्रत टा द्यमीट्या गह। ब्राट्ट वठभवांइ तां খ्रिरु－याप वीडिभां नठH－ भवल उै सुबडी ऊरीं मिल मब्टी। भभडा डे में ड़ी घंपत तुष Јर। प्रड्रू，टिमड्री भरिव हा सिभात ही वमट सा वग्वर जै। नियत हेषला गां छुपन ती माप्टिभ
 भंता भर्ठूँब भगटिभा टी हठडें＇उ वी गालडार चै－

 तब टेषा उव नेहवी मगष्टिभा वा मरूर्घय्य॥ ठाहर मठे रुम घितू हतउटि हठडै मीयु॥（म．इ भैगा य५१）
मानी निंटठी जिम मठीत ला माट वती जाहीटा चै। मठीत त्छ महावरु－ मिंगाग्तर，मेवहे द्वनु，भाठ्ड़टल，मत्ताट्ट टा मभाठ ट्टिरड् वठत हिस जिसठी गात्नाण टैँैडी नांटी है，उतु मर्गिघ मभइणुंटे गठ वि छिव वाष्टिभ जैं ठुल़ी हेधी है। मात्वा बैस हिँचे वी वीि सांटा चै，वुश ठाल ऊर्टीं नांट्रा। मर भंजिउ－हाम उैं घिठां वसे ड्ञिय亏 ऊर्वीं गैटा－

उ़्रे वर्गफ्या मे वुल्खी सेपी किषि यठ

उग्ती ड़्ववी मुपिटा तुया वभड्ड वेते
 इञ्ति पटे वाहग्ठ ॥I वुत्ता मेढा भै मब विए्ड उाधिभ पिवु मीनिड रुभ ड्रमागा। हैसे
 मींे मिचि त टेप्टी विम डी मुयु नाहै मक्र मेगी॥ मेटित लेवा मेंटिठ भाज्री मीये विसै ठ वेठी॥（म．१ भ्भां १य8）
टिम लूटी मतीव रा म⿵ठ，प्रु् वसूद्ञ भाटिव ही मंब भभडा भडे टिमे़े हिक्वां त्रे हैइत टा तउत वठटे गेटे मी ठात्रीप्प

मग़िघ्र से रठमाप्टे भागठा उे उ़्टे चसे गाठ हाल्ता पट्वे，भातहे भीचत टिव के टिवम्बूणिड चैवे यूड्ड सा ीिभतर वतरा षग्वीटा जै। टिम उत्रां वठर हाल सथ उथ मिज्ञा भाउमव तीटत से वग्षे घट्टे
 वै। भाष्टिभा से दौपर उइत से ता डे पै जाप्टीटा बै। सिंडग－ठठिड むे षनुटी वस्ता न्चि ठचिल्ट भा संत्टा चै－

दिधे घिवर्त ट्रमट वितद्षा वते सित उसि भाजभे वैटि टिभग्टी। सप उप्र मितण वौन नघ वादे वमएू वितामे भप्र भम्मूभाप्टी॥ （भ．q भवा २३）

भरे छग्ठट्ड डा दीभि ना मडिठात्व fिले
 भयेतण नाटि॥（फ．8 भीवा पयद）
मिषेप हिछ विणा सा मवहा है वि मीमात हित हिस्ते बैटे भायहे मठीव， पर－यटाव्वएं，त्रउषे जां मठो－मरषंयीभीं टे मष्व भाशिक सा भरिरात तर्जी वतरा षग्वीरा। हिगतां से उवमे मीमग्ठ हिت
 वै वि वूश ही महा मष्व वगिट हाल्ला
 चृ्टे ही भाटिभा से भँठ उँ हितसेय वचिट टा तउर वठसे चैपे भायहे भमली माप्दी भवाप्ल थुठप हे ठाभ त्रि मला जिठसे हित दमाही वैधटा ताडीरा है। तार हावर जै－

वियू भंटठ अवष्डा से टीमटि ठा कैसी
मीठर्गठ॥ जघ स्लता नीदीय वही वाल्ड संड सर तारव ठणज मभ्गि॥
（भ．५ भंगा ₹จさ）
मरा यवमग्डभा ही मवट हिछ ठठिट सा मुडाध्रि घलावे पिग जा्ट तथहा बग्टीटा जै वि माइ भापल वूँ ही रुर्ती जै।
 मटवा पूप्र चै－

मड़ विद्ध रेषै उिमै वा तिति वीफ्रा उत्र मर्शत्त। हाहव मठहि वउडात वी वउडा वपे स्लात्तl（भुगा पप१）

छिच हइडागी गत निणने पिम घिषज्रे तीटर－भावता डे उुतटे चपे छलटे हर्वी डे भाधटे नగभ గ్ मढल्ल वठ लंँे गत।

ロロロロ

## ——मगिउव मिलट्टी，भवामउ <br> ढ्रममउ से यल घटे मिगतरा टा भापन्न－मइवरणभा







 मी में वैमवात हे वुझेद्धिभां＇च टी घसरा हवउ मािड पइत से लेपे लतारा।

 सेंटे गैटे，हग्ल ममेक्रिक चठ मड्रा से पृयात छा．समहंड मिभ्य हेवी।









 वर्टि मॅज，टिडियम्मव मॅत，गालपी मॅष，तीटत मॅष भांटि घाठे उस्ल वर्टटिभां






#  घंप्त्र गठराभ मिय वर्गठी मग्गती 

*. उा. गठर्घम मियुय साद्यत्रा

टेम टी भाज्नात्री ल्यी भायल मड वु हिबाद्वत वर रेल दृम्या घग्यु चठराभ fिंय वाठठी मग्ठी थैताप्त टै

 निभाष (पाप्टीलेंइ) भडे घठभा द्चिच हमसे
 हो नगग वे टिर भितने 'गारन' लटी स्तमीक 今िभाठ वीडी निमटा हिमार्तां

 सेलू दिच घलग्टे वाटे वेम डे तॅलां भह़माव ७िट भमीीवा से प्रउठठाब गारती सीइठां

 हांमी टे टिँडी ठापी। छिठ घड्रा सिभाटा; सुमीकीए डे थॅवग ऐेन उणाउ मी।
 ग्रिभ्निभवप्त से टिव गुमराभ सबे रिँ वागती मागती दिच मू. लाब्ड मिंय से भव गृटिभा छैमटी भाउा टा ताभ औैट बैठ
 दिच गी ग्मल वीडी। छिव यनुप्टी दिच

 जैठा यूर्ष्वय का गह बतने छिमते मिइल सा टिमझिवा थाम बठर मवानं थनुप्टी ढॅइ टॅँी डे हैन टे ठमए्ला रिषठ 30 दिच 11 खुथै मीते डे बउऊी चे विभभा। हिंसे छिम ही छिमत 16 माल्ड डी मी। हैभ दिध छिमटी भुलावन्ड घल उट्टी। उतराभ fिभै छिमटे वम्मटवटग्री

 घर्टार्टभा के वेटल 亏े माल उव हैस


 लुा fिभा। $1905 \mathrm{~h} े 1907$ से हिछरात

 राल्य त्र विभभा। मू. भनीउ fियद सीभां उवर्वां भडे लाल्ल चैर 'हलूर' से वैभी उठतिभां हे बैम से भल हित भानिती गलष्ल धैटा वीडी वि हिमते टिन हैमस्डा वर लिभा वि सागे हिव हेम्न हिच गठे नां दिटेमेंां दिष, छिठ भयल माग नीहर


 रीउ डे उंबा वंठा लूटी ठट्टात वे विभा डे बैषे हिव दूभ वंचही दिच ठँवरी रण एटी।
 से लेवां लटी दिटेम्नं द्चिच नाए लटी
 फडे वैहेडा भगटि टेमां से टिभीचिमसर
 प्रेन्नफ्त वीउा जांटा मी। तिहुं ऐेश्रां सीभां
 ऐममां दिच डाठडीभां त्रि रहतउ सी तिगाण

 हस्त्से बाठडी दिव निते द्ञिरववे प्रठत
 ऐे भळ दिचि हिव दिमगत थैटा गेल वृटठडी मी दि टिम माठी मचिडी हा भूल वगवर
 मक वि सिउती रेत उद टेन भान्त्रण्ट रुरीं च नांटा छैउती रेट उद ट्टिम मषिडी दिच वेशी थीीटतउत गैहा मंगद रुीं।

केहैइा नाट्ट ट्ल्ले घग्रु मग्रे उातडी उग्र हिस गंबा वंगा वुर नाशिभा दवरे मरा वेशी देठ छुठां बेल द्विउता टी थैमा ठठीं मी घचटा नि छिठ भायटा महत भवो सागी ॅॅध मबह सां द्वित हृथम मुटेन्न
 काठडीभां के घहा उउम भाहींटां। बटी
 लेंटा के भालटी हैवरी 'चै घंत्टे गैंटे
 बइझ मां गंगा वंठा ठीवट् मवावें गठराम fिभu एमेघठ 1907 द्टित वैरेइा बहा विभभा। छेचें वतराभ fिंय डी भाज भमं


 हैन सी ऊँवटी मों निस्लिभा घूलहैंड निै
 प्रठी भरुमाठ भैम देहे बुझ्ञ वैठ हैंसहत ने हैठब्टहठ (वैरेउग) द्चि व्रंडीवग्ती गडीटियीभां दिज लवो गंटे मर Qुठुं दिच 23 माल्डां टा घैवाएली जुद्धब उगवररण्व,

 म्राभल मर। वांडीवग्ती हिसम्वयाग्त वॅषट
 दिच भा ताहा मुडाहर मी। छिव वेहेता

 उणिट मतावें छैठ ममटीवा भा विंभा। देचे भावे छुमते मीभाटल से टिर मवूल
 छिमते भभवीवा टी भाज़त्टी से मैuवम

 मीगाठिड Јेवे मम्रमड् व्ंड़ी ठाल भीवाठेतां डी गुलाभी उं रताउ पा मरटे चं।
 यन्तुभा सिदिधिया हतनहाँ मी। छिच घड़ी सूप भडे यूड्राहम्नग्ली भीवाठेत्ती दिच ॉॉल घंड वर मबडा मी। छिमटी आतिटी

 वे य़वाठर रूा पटे मर।

 द्रेशिठा कैपती दिध रेंवरी मिए नाही क्ञिमटा छिव घाभस टिड मवयृमउ ही

 उविउ दिव वैपही हैइही यही।

आते ‘ठारत एवित’ रा सैँच रत्री मी

 भंवावेत्ती वम्त सीभां दपीवीभां पूडी नंग्डाइ वठर एटी भंगठेत्री दिष हिन थठता
 उदिभा विगभा। हैंमत भमतीवा भडे वे हे हा द्वित मषाथिड उावरी मिठाठरां दिच ही

 भापटे पवचे दिच हथे छिमटे हेष घजे पइलेटाठ फडे भिवाठेती-मभवम्त दिठेयी गृथिभा वठटे मर। टिमे रनदे केतेछा ही
 पही।

1909 हिच 'fिर्ट्मउए भैमैमीटेमत’ राभ टी टिव नवेघंटी वर्टिस वीडी वाट्टी
 मवॅउत नी.डी. वुभण्त (न्तिमटा थ्रुठा राभ

 निम्य वेकेडीभत मी! उठरम निम्य टिम फैमीमीटेंतर हा घड्रा मत्वाठम भे छेंटभी
 लटी छिवग्ट दिच 'मदटेन मेटब’ राभ हा भुषष्ठ बचिभा विभभा, निम सा फैडीटत नी.डी.बुभाठ मी। टिये तिग टिव थैलाष्धी
 शिनात हे तारी वीउग। हैठवुद्त दिधे सूइत से टिंडीमा उण्ठिम टी उतन सा
 टिम टिच ही गउतर्म मिये के भायदे


बैरेउग हिت पूट्टेम वउत एटी बाठडीभाँ
 टिट्रुं वार्टिरां हैं



 डे मथैस्ट 1910 दिस टिव मीटिता घुलूम्ही
 धैठग्त हठभा टी विएकडाठी घाने दिसग




ठाल्ल कैहेठा पूट्टेम वठर से ऐम हि विएक्रुत वत स्लिभा विभा मी। हम टिट

 भैमैमीटेप्रत दलल मॅटी ठााटी टिम भीटिता द्चित उातव राप्ष $भ$ जे नी.ही. ब्रभात कें
 मवरान ही घंजी तुषेयी वीडी मी। मतबग्ती


 भंटत हमन ढॅइ नाट हा भाटेत्र नाठी वर


 टिव भभीवर मिँउत ठेभिमघंता क्ष उत्र


 ठो टेट, छिच नलटी बी वैरेछा भावे
 नट्टेवा। उण निसरूसिभं नी कैभिमघतठा भायही हिँनी घंट (विम्नी) हैवे वैहेडा
 ठाल्ल मिनीवा सै फापिभा।

भभतीवा पर्गुष के टिर हांत हित
 वैलीछेतठीभा टी घठवले फ్रीटचमिटी
 हुसहातां टे मीयतब हित भ्भाष्टिभ ने ‘गारत एडित' हो मूठ्ठ वठर ही जेतहा घहा गठे मर। भेउवगम्नटवी गल्लग पही उननी

 मक। उातडी हेनहात उग्ट्रेटे मर वि नसें
 हिम मघिडी टा एाड छिठा वे भिंवार्तां दिव़ूय तारव वत रेला हिच मचे उलाड

 च ज़ाह्यो।
 थैनाप्री हिन 'गाटत' चवत्रा नारी वीउ' विभा मडे मैंठर मिय्य उरहग, स्राष्टा

 उां गठरूम fिंय उत, भर छे पत हाल


विभा। यविएं छिठ फलटा यठणें 'टी fिँच्रमउगत' फडे ‘मदटेम्न मेडब’ लट्टी लेष लिदिभिए वठटा मी ग़ह है मिर तारत
 टी भानात्री सूटी सेष लिषहे मुत्व वत
 घात्रीभाएां भंटग्त द्विज ग़ंटे मठ।






 दिस पूट्टेम वठर टी टिनान्तु रा टैँेी। प्रमग्नठं है है टिभां स्थभहित मडे हैठ्रां
 बमेटी टा ताठठ वीडा विभा। ठिभां दिउाना से हठहाप्ते षटषटप्टे नाषे थठ वैरेक्ञा हृल्ले वुश ही मृट्त हरी डिभाव


 वठत सी वैमिम्न वीडी। छैमगग्रा भग्ता टी अटरा के टिव दृत्र दित बिंसीभां ही

 हाल मिँयी टरत कैटे टा हैमला वर सिमा। टिम ₹म लटी भभवीवा उैं उसिभान सिभभहिंटे गेटे घघ से डित चठ मर्वी उाॅ्टी उागा fिभिय, बाॅ्धी

 विाहड'ठ वर लटे वाटे। कैरेइा सी प्रािमिम बेल उठरुभ fिभि हिव़̆प चठ दी वटी वेम


 मर्षीभां ेे 2500 इग्रत ही क्भमग्तड से
 Qिंडे मठवाठ दिढ़̆प बगठट्ट्टीभां वठर,






(घावी थार 9 引)

# Motherly Affection 

\author{

* Bibi Dr. Inderjit Kaur
}

■ust recollecting mother's affection, one goes into a sense of ecstasy and heavenly bliss and feels loving hands of a mother around oneself. Mother's lap gives you the taste of heavens and you fee as if God has given you all the virtues of the world. For the continuance of this world, God kept mother's affection as the most important ingredient. Motherly affection is present not only in human beings but also in birds and animals. Before giving birth, a bird makes her own nest by carefully selecting twigs and twines to make a masterpiece, which even human beings can't. The animals also find a safe place; the dogs would dig up the earth or find a cool place in summer. Motherly love and affection till humans, birds and animals with great energy. Feeble and delicate mothers under extreme hardship would collect food for their children. Small animals would bravely face bigger predators at great risk to their own lives to save their offspring.

Motherly love has two different taces. In one, it disgraces itself, when she steals the right of someone else just to promote her own child. At times, to beget her own child, she leaves aside all ethics and moral values and does not hesitate to sacrifice someone else's child:

भाष भा भभडा मॅगटी तिति टिल्ट

(The love of Maya is enticing; without teeth it has eaten up the world.)
Same motherly affection, when used for His creation, becomes God's attribute. It can be showered on the whole mankind and can help poor, destitutes and helpless people. Bhagat Puran Singh's most compassionate and generous heart was tilled with the motherly affection to the brim.

When Bhagat Ji was serving at Gurdwara Dehra Sahib in Lahore, some people brought a crippled boy to the Gurdwara. They explained that

give them a lot of eatables, but at times fail to provide them the basic facilities, which they actually need. The child, being a cripple, could not clean himself and was uncomfortable on the hard pebbles. He tried to move and in the bargain, got himself smeared badly. Seeing this, Bhagat Ji's heart went out to him. He lifted the child, cleaned him and took him to the manager of the Gurdwara, asking him as to what to do with the child. He was told to look after the child, as he had picked him up. A prayer was also made to grant Bhagat $J i$ the love and strength to look after the crippled child.

God had blessed Bhagat Puran Singh with plenty of love, affection and compassion not only for the abandoned child but also tor the whole mankind. He became a unique personality with unlimited faith in God and in his own mission. God is there to bless us all but only
the mother of the child was dead and the father, who was workIng for them, had left his house and disappeared. Their women-folk had looked after the child for about a month and a halt and thereafter had refused to look after him. Even the orphanage relused to take him. They had brought the child to the Gurdwara considering it a holy place, where anyone could seek shelter.

The manager of the Gurdwara replied that they had no arrangement to keep a crippled child in the Gurdwara. People, who had brought the child, were at their tether's end, so they left the chifd on the stairs of the Gurdwara and disappeared. Perhaps they thought they had left the child in God's home and if none in Gurdwara attended to him, the management of the Gurdwara only would be answerable to God.

The child was removed from the stairs and put outside on the pebbles. Seeing this, many visitors started feeding him, resulting in his getting loose motions. As normally is the case, in helping a destitute, the people
if we reach out to Him .

The cripple was named Piara, as Bhagat Ji had started adoring the child. This four-year old mentally challenged and crippled child required love and care, as generally is the need of an infant like him. Bhagat $J i$ would provide all the love and care as he had inherited this in abundance from his mother. He writes, "What made Piara happy was playing with sand and letting it slip through his hands. Seeing this happiness, my heart was also satlated."

Piara's lower fimbs were very weak, especially his feet. So for passing motion, he had to sit for a long time and sometimes he had to be given enema. During winters, there was always a fear of catching cold. Bhagat Jiused to keep his bed wamm and then put Piara in the warm bed. He used to lie by his side to keep him warm as Piara's own body could not produce the required warmth. I don't think that even a real mother could have provided so much of love and affection to the crippled child. Bhagat Puran Singh narrated that on one occasion, they
had very little to eat and in desperation, he told Piara that he was going to commit suicide by jumping into a well. Piara immediately gestured that he should be thrown into the well first. Remembering this incident, Bhagat $J i$ often used to go into ecstasy, hold his hands and say, "Piara is my God, he has saved me from going astray." Then he used to address me and say, "I think of Piara as God for another reason. Whenever I look at his crippled body and especially his wrist, 1 remember God and thank Him for giving me an able body."

There are a few other incidents, which I would like to share with the readers. Bhagat Puran Singh used to study a lot and always had $7-8$ books, magazines and newspapers lying around him. While reading, whatever appealed to his mind, he would note down and put it in his pocket. Piara used to be sitting by his side in a chair, while $B$ hagat $J$ i would be working, sitting on the floor. At times, Bhagat $J i$ used to forget that he had put the notes in his pocket and would start searching. Piara would be watching and would promptly tell Bhagat $J$ ito look into his pockets. Bhagat Jilove him for these gestures.

Piara used to accompany Bhagat Ji wherever he went. Once he had come to me in Sangrur. He was to be operated upon for Hemia and did not bring Piara along. Surgery and recovery took quite a few days. When we retumed to Amritsar, I started talking to Sewadars and Bhagat Ji went straight to his beloved companion. Piara was obviously very angry because of Bhagat Ji's long absence and refused to talk to him. Bhagat Ji sat down next to Piara, got hold of his feet and repeatedly asked for forgiveness. Piara would listen to no reason whatsoever. Seeing no end to the tussle, a Sewadar came to me for help. I explained to Piara that Bhagat Ji was sick and could not come earlier. I also told him that in future Bhagat Jiwould take him along wherever he was to go. Only then Piara was pacified. Is there anyone in this word who would shower so much ot love and affection on a destitute crippled person? Even when Piara was more than 50 years old he still used to sit in the lap of Bhagat Ji , who used to say, "when Piara is sitting in my lap, I feel I am sitting in my mother's lap." Bhagat Jilooked after Piara for 58 long years. A child abandoned in the name ot God brought Bhagat Ji so much closer to God:

महल सरमु गठि तर वा छियत्तिभा तिरीट वीह महिड्र द्वियाउण! (Чइ२)
(How fruifful is the birth of Lord's humble servant, who has proved to be His worthy son.)
In another incident $B$ hagat Jicame across a destitute woman named Aasha Devi. She was very sick. On examination, she was found to be suffering from T.B. At that time Pingalwara was located outside the Amritsar railway station, near the Tanga stand. He brought Aasha Devi and her four-year old son to Pinga/wara. Bhagat Ji's motherly affection made him repeatedly cover Aasha Devi's phlegm (spit) with dust. He would collect tood from houses and keep the best for Aasha Devi. Sometimes, he used to bring grapes for her. During this period, he became very attached to Aasha's son Jeeta. Aasha survived only for about 15 days and entrusted Bhagat Ji with the custody of Jeeta before dying. Bhagat Jihad great hopes for Jeeta but to no avail. The boy was also found to be suffering from T.B. and he also died in Bhagat Ji's lap. After Jeeta's demise, Bhagat $j$ ithought that he was to contract T.B. from Jeeta and die. Then his mother's soul would ask, "Why did you sacrifice your life for an unknown child? Why did you let him sleep with you?" He himself thought about the answer and counter-questioned his mother, "If I was to contract T.B., when I was 4 year old, would you have refused to let me by your side? I am sure you would have kept me by your side. I could not have given love to Jeeta, if you had not given me so much of love. I had to pass on the legacy of love to him and I did that with great sense of satisfaction. So my dear mother you should be happy that I had followed your teachings. Jeeta's disease had no parallel in front of my feelings of love for him. You only are the creators of these thoughts of mine. I am sure you feel proud of me."

In our organization, there is a person named Sarwan Singh. When he came to Pingalwara, he was just 4 years old. He told us that he was very unhappy in his family and one day boarded a train and landed up in Amnitsar. He worked tor a few days at a wayside food stall. Someone told the food stall owner that he could not keep the child and the police should be informed about him. When police was informed, they left the child in Pingalwara. Bhagat Ji put him in a school near Pingalwara.

One day, for some reason, Sarwan was beaten by the teacher and he ran away from the school and boarded a Delhi bound train. Once in Dethi, he was again picked up by the police, while loitering on the platform. when they asked him about his whereabouts, he did not tell them about his abode, fearing that he will have to go to school and face the teacher again. He was sent to a 'Juvenile Home', where the treatment meted out to him was even worse. After a few days, he realized that Pinga/wara was definitely a better place and informed Delhi Police the address. On receiving the letter from Sarwan, Bhagat Jimmediately set out for Delhi. Officials of the 'Juvenile Home' refused to let Sarwan go with Bhagat Ji. Nothing could stop Bhagat Ji's concern for Sarwan and he lay down in front of the vehicle of the official and refused to budge till Sarwan was handed back to him. Soon Sarwan was back in Pingatwara.

Bhagat Ji's affection was equal for all the inmates of Pingalwara. There were many children like Sarwan and if any one of them cried for any reason, he would take out his steel bangle and rhythmically sound his begging bowl (Baata) to quieten the child. When Bhagat Jistarted spending most of his time in Darbar Sahib, the children would await his arrival and rush to him for the sweets, he usually brought for them every day. Having distributed the refreshments, Bhagat $J i$ always felt happy and satisfied.

Bhagat Puran Singh always prayed that God gives him enough strength to continue his work for the suffering humanity, even if he was to spend his entire life on the pavements. On the contrary, I once heard another prayer in a huge gathering in Patiala, where a gentleman made a supplication for all the worldly possessions, including a bungalow and sending his son abroad. What a contrast! A person devoted entirely to alleviating the sufferings of mankind asking for, "Let me stay on the roadside but keep me in the service of the downtrodden":

वैटि हिनसे ऊाबी w户े हैस हबत्र मैमाठ्ठ॥ (१८११)
(The Faqirs, who are embodiments of self sacrifice and self denial are few and far between.)
Bhagat Ji considered the Pingalwara workers as part of his family and look after them like a doting father. On one occasion, he deputed a Sewadar to visit another town for some work. It was thick of winter when
the Sewadar started for his journey. Suddenly Bhagat Ji realized that the Sewadarhad no woolens on him. He ran and reached the Sewadarnear the Bhandari Bridge in Amritsar and handed over a Shawlto him.

I woutd like to share another incident that was brought to my notice. Once, Bhagat Ji was to attend a conference in another town. Bhagat Ji liked to travel by a passenger train and also kept a Sewadar with him, who could do the reading and writing work. On this occasion, he had two Sewadars with him. He gave a lot of writing work to the Sewadars and went for the conference. It was summer time and Bhagat $J i$ was continuously giving more and more work. This continued for $3-4$ days. One of the Sewadars was now running high fever but he did not stop writing. When Bhagat Ji returned from the conference, he was told about the ailing Sewadar. Bhagat Jirushed to him and kissing his hands remarked, "God has given you such a beautiful handwriting."

I received affection in abundance from Bhagat Puran Singh, which he expressed with torrents of tears. Once he was not well and spent a few days with me in Sangrur. On recovery, he started planning to go back to Amritsar. I got busy in the hospital. After sometime, I received a phone call from home that Bhagat Ji was not saying anything but was crying continuously. I picked up my bicycle and quickly reached home. Bhagat Ji was still crying and was so overwhelmed with emotions that he was unable to say anything. in the meantime, my brothers and sisters had also arrived. We gave some juice to Bhagat Jiand calmed him down. I asked Bhagat Ji as to what had happened and why was he crying? He replied, "Now I have two Piaras. When I am at Sangrur, the Piara at Amritsar is away from me and if I am at Amritsar, the Piara at Sangrur is away from me."

So much of love and affection can only be showered by the blessed souls of the Lord. Such affection gives one an unlimited moral strength to tread the difficult path of Sewa:
 भाप उाहपष्या (२ग)
(It is very difficult to serve the true Guru; it is possible only if done with complete dedication, by shedding the ego.)
(Courtesy: Elemai Valce Nov.)

## घाष्द्ध गतराभ fिभ.

 नगणन डे घिठाह उैं पचिल्रां हारती हैँचद्रां ही टिव भींटिंग चँटी त्रिम टिन गठराभ सिंय्य ही टिच इिछिटी लवाए्टी गाटी वि छिट बातड से छैउत খुवघी प्रेमीभर टेम्नां-太ीగ, नाथात, चंगा वंता, निभाभ भडे घटभा द्वित ‘वास्" हा यूत्ठप्त वतरा

 रेनहाठ बैहेइग फडे भमटीवा सें द्रायम मेसेग्न थतउले मुण्र चे ठासे मर उंवि टिव मिवी वैरी जेकटां $\boldsymbol{x}$ निँघी Јट्टी उठीव त्रि मैणाेत्तां हित्वूय हेम्न हिभार्यी घठाएट्ड षाज्री वठ टैँडी नाग्टे।

पेमीनीभा ऐे छैउत-थ्डत्री टेमां हिस
 टिहवस्लाप्वीयां - उाम्टी वृत्रह्ड मिभ,
 याठठ ठाल fिल वे गाटत हा भूत्ठ वरता फडे चुथड सषेघंटीभां वर्टिस

 ऐेम्नां ह्टित केत्रिभ ता छुरा मी। सठमत भयिवग्नी भंगठेतां हिढ़ुय हितुाँ सी गठ उतुां हाल्ल भरट वतर लटी उिभाग मर। नलें तबमरां हैभाता घटाप्टी गिभाभ घटमा जैतता हेल चे चाटी उां चनराभ मिथ्य भायटे माप्ही मैंगर एात्ड पाठव हांगा मिभाभ कें तिवल्ड वे घटरा भा विभा निखे हिमते हैँ़ी हाप्रिहीभां द्चित यूछत वनवे
 मैंघठ घट्गट्टिभ।

हृतटी 1915 द्वित गतराभ मिंभ्य मिभाभ מडे घवभा टी मठवॅर से हेने चवेंवा विाभा डे छेंच मिभाभ सी मठवॅट युत वठवे घटभा ऐे मैमैठट भंजे भाज्टा्ट्टी
 तीगार भा विभा। टिँचे हैमटा पिर मप्वी उत्लीभ ताभ 'वाटब' भंजष्षात्व चे थतसे fिस्टमउाठ लितांट्रा गैस्टिभा चवाइभा

 तिम ऐे ढ्रल्यमत्य छिमत्रे वैगार उैं धिमवटा पै विाभा।

## रषा

5 मぶषव， 1912

मी मउताठ हगठ रेद ती हे नरें मीमग्त दिध＂मुध ढल＂टेट हाप्ला हम्न हा वितद्टा लता टैँउा，उस उठां उठां टे चैत माभग ही ठाल पैटा वीडे निठ्ठां बतवे
 यग़ष्ष के मुधीभा वैदे，टिमटी वरत पढ्टाहे उे डीवा सरभी तिंड वे जान्दे，विछिंचि मीमान उं तिँउ वे ताम्टे लटी चेव वसी वठभ ले तटीं पैंटए，तिउ之 चैँ वठम गट मड
 भॅउटा चै，नौधिंट इत्तर पित विमे वगम टी सी० रठीं मैरूरा।

ठम सा मभइ हिध पैहा，टिवटा के
 लरभ नरम टे बठभां ही मैस्र के हिसजा सी उउताप्टी हेम पामे ठुष तुणीं वतर ऐेंटी，टिम वठवे मू ठात्व सी हे मग्ती वाली हित ह्टिमटी मर今अभ स्यिसी चै，भडे हागठाव टे ताट लिषे गर，से भमी मट मृट्वे，पनु पनुवे के वाध्छें ताए्छिंके मैस उं ह्रटीटे के हितमल चेने ठाभ टिस टिव नाम्टीसे। ट्टिम ताट वाए्हिट टी भी़्जिभ प्टेम उतुं हॅमी चै：－

ठार ठाव्दड उेठी Өिउवमि मैहू॥
घितमि नार्मि उछिमै दिध हैलू॥
दिम वुट गापिट हे ढेठ से हिंग
 हिस उां वेहस गुाठषग्ही टा ठाप्टित ग्रीटा जै，थव वसा हिस गाठघग्ही टी हजापजा
 जै। वीवउत हे घी टिउडाम सा टिँमा भयटे दिस लैवे हान्हीभां ही हानां हा वैठा लिभा मी，भव छगुटां ठॉल्डां－चात पार्टी टी वषए，गात टिउग्मां टी वषा， वीटउत अ हिउगामव भूर्मिगां से वर्गहित－
 के मृमउवाठ से ग्हमटं घ्वधमवे वल्रत्रता हिस मउस्ता द्टतडा टिँउा मी，यत समें टे हेत हे टिउवग्म यूर्मिगां सा वर्पषित


| घाल्लमा मभाष्ता |  |
| :---: | :---: |
|  |  |
|  | वलら ए |
|  | तप्घी यतधा |


 मे वुन उां उर्लड प्रवां हिस चै विया चै
 हॅइ fिग है। घावी ठठी रष मे ताठपाट्टी ही उां किडे दिवस्टे सां के गी गैटी बैछै， ङे गात टिउगम्मषं ही घी मढा हिल्टट वठी चै।

भन भमां भूत यदिड्ड टात पिउउग्मां ही वषग थठ वुछ हीछान रठरी चै，डान्टें हिव वॉस्ट ठीव वै वि हेटे हैे पूमिगां भठ गुटविभां से छैसट ठाल सने wती तार टिउगमां टा यतजम्त हीयाभा है，भव छिम

 गाउस्रभगवमां ही दिल वतवे हिमटे थ्यटट亏े घंट चंट हे गम्ती घी घगु वीडी जै। uैप मुव्तीड छिठी है，तिमरे घंटिथां हित यतमझठ सिभा्त है छे से वसे यतमथत वैठे गेट टा मभागाभ नी ठतीं घट्रा उां सिभाष्त वी Јल बक्टिभा ？भाय हेपसे वे
 अें हयीव चै। छुमस्रा टिव र्तल हिच


 डा हान भवायर के हिउतेम उां चठेव यूट्टी लटी छिमटी मैन के वैले वैले वी वउल टिँडा，यठ भाम गी टात के मेटव टे टे देले चे हीद्र मउभिता दिध मण्टीं भवग्यई हे मभे घठाप्टे। टे टे टें हेले वैमां वाजां अैं टिगस्टे गेटे गर，ट्रीभां

 दिमहा घह्रा लाब हिंग चै वि यतमथत मउमीवा सा मुब्र भमत घैंटा नै．भव भाये

 मगविघां टे ममें उं तण मफ्ैें पठभमाल्खां दिति ठाठ पिउवम्मां टी वसर हा हीीठा

 ही वषर गुटी ने，भु देमे वसर से छेठा टे भवातें भैसत वीवउत मेगले सा यठ
 भमहाठ बैंस है，किस डें मान यूठट है वि वसर से भवाठं मैगले से पठ के घिमूग्म ही भात्वाजा है।

विमे वैH से वैभी तीहर लूी，वैम
 ही भउ लेन्ञ चै，नए उर भ⿰हे टिउवाम टी मेझी तवीं，उस उर सिल टिछ हॅ亏े रूँदे सा भाठ वँटी ठठीं तठ मवटा। भाल्रभी टी प्टिर हिसजा मड उें स्नहतरमउ
 भात वठरा नै। हैठिभां टे गाट，छिपवाठ， हेवी，सउ，मउ，पतम，टहिभा भाटिव मृट्वे भयहे हित भहताले पठहेन वत जांट्टे उर，भैदें मुब्ड गाट मूटींसे उर，यव भॅधां से प्रव्वमहे किसग्ल ठां बेट बतवे भैंत யठ ठर्गी वठटे，मे टिम वषग टे डीवे हा फट जाल्ल वैंनी तीटत हा टिव छातः भम्यग्त सट जाल्टा है। हिम लटी हत्ठी नै वि गत पतममाल्य से बाम्टी ती भ२ते गुवस्रभाठिभं हित वसर हा ड्रीवा दिल्डा हा पैह ऐेह।
夫ै，तै भाय टिउवम्म ठरीं यनु मवसे，भव फहेवां भैमे मिंध वर तै मउतावां टे फमेलव तीटर द्विधिभा दे मुट्तं द्वितटे वठ नांटे उहा सेवठ वष्प डा उठीवा घंट वठ
 हिम्टा वड ताप्टेार，भव ह्टिमे ॉॉस्ट से सट ज्ञात टा घतउँष भमत उव लहै वि मिधां टे घँचे भठ थिळां टे हामी उठां उठां टे वुमीवां हित वर，भव भैठजमझां हिस बटर तठे 3 भुठज ऊीठषां यत वुल्ड तचे गर। चठ मऊां चे मप्पूभां हिस टिमेम्न विमा भूते टिउवग्म अं भवाजग्ड मिष्ष
 टी घघठ గां उैट वववे मर ताजात 亏े माठ उें खाल्की चै，＂श्निम स्लाप्टी वॉसीं，हमे

（घं्वी पैता 12 जे）
qर्ठ

# नी हावितात्वा नी बी हउवि॥ मू गुण्व वृंष मर्गवष नी से छिचटेत्र भामा मउळा १，भमटफटी－१६ 

भुल



रठ घ्रीका मै हीभि वे वै वठी मलभ्न॥ गिरे मैइा ड़्र पटी मान्ता भूरि तग्रू १॥उत्ర̂॥

मिया मेर्हति fिय थीव भग्गाणि निपि मियि॥ मै टिव्र हग्रु त टीमतै मान्ते गाठ घ्रुयि॥२॥

 ॥ミ

थैछिड यापे नेंप्टिमी तिड थनुरि थुताल्टता
 ॥४॥

टिरि उपमी घ भणि उप वणणि तिउ डीठप्र ट्माम भाथ त ठीर्वि उभमी वग्ठे बटे हिटग्मा॥य॥

हिवि मिंट्र तउत रणि वाबसे मे तडी वगट्दगिण घित्र ठा़ मघट त ह़टगी ब्रुमि भाहीि ज्रार्टणिहै॥

 इठारि मू नग्गो॥つ॥
 గग्रव रणु त दीमबै मन्षे मतू माते॥ ᄃ॥98！

 तग्हे（भेठ टामा वाॅ्ट）॥१॥



（वपी）मिपां（यीठां）त़ मेंद्से गर（वि भाथ）मिय थीठ（घट ज़ाटीसे，亏े

 （कटे）ता ब्रूले॥२॥





 लुविभा वैठा जै 198


 विम लटी चँंटे मत？॥य॥





 हाल छुण）गठी री इताडी हि ज्ञा छेठे गर॥つ॥







## १०० मल्ल यविखां

ममें दिस मधी तीछीजे वडटा，भालूम， फैम，亏े घे प्राभठगी दुय ठगी है，भत गठ वेरी छुठी ख्रुमी से भवाठ है，थठ ते ठम मॅंे मउगाठ टे लॅमे मగ टे टेवग्गू đॅट उँ गुंटा चै，छम भम्मे ठृष ठरीं गे। टिम ॉॉस दे ह्डु वठते एटी घी वरा घडी वाट्रण्व जै। वैटी लेंर हीव भववां जग छैंच बीठउत टे उाद रा ममझ मॅबट बठवे पठभ हिच्च ठम यूठीउ ठठी वठटे， नेवठ वसा सा मिलीमिए्या तागी गैदे，वठ विमे क्ति मीविभा किले उं वमराटिव पूम्नें भात घीउ ज़वे हावजाउ के वे उ़रीमां fिंटठीभां टे मावे मृट मृट्वे ठम राप्र छिठ्वां टिं लॅगो। टिउगम्म सा मृट्ता के हेठ मिस गाठु मागिघां टे यहिड्न नीसत
 दमड़ चै，टिउगम्म दिच मै मुडे वम चै छिठ मूटिकां है है हेमeे मूट्र हित भाय उें भाय सगांटा चै हे टेम उतां लॅविमां नै छैउस छिपऐमे，हैंचे रुमेते डे भारटम
 बलजाप्टी के हैउतमाण राल्र उठी नांटे ठरू， भव मृल्टे टृष्ठा मूडे गी गाव चतरां सा प्रेभी च नांट्रा वै। मट ठाठ उठां टी
 तांटी वै，उस मउवाठ ही सिषजग，वीठउत

 वै। में द्दिं रुँ मिंध भौमे भाज ते भाषट्नो वि मउताठ से हसाले चर्विड् जा भमुबे हर्गिभा से मुल्टे राल्ट भेठी
 के दिँची हिच थवहितड चैटिभा मां। टिट माने हैंडिभं टा टिउडाम वी चै वि किम


#### Abstract

उताउ य्रठत सिथ्य से घतमी सभाताभ मैँवे      भवावें मैमपा टे सषे भडे बाप्टी वल्य्यीव fिसिय से नषे के वाठवग्टी हा वमर्ञित              


 उरा नेवत भामां भथरे टिउउग्म से थठठात टा टिठ वसा दृग्ला जी़ीवा घंट वन सिउा


 राहें ट़ॅट नाप्टेठाए，भव भैम गँ गे डे वेदल राभ पीीव निषषी ठठ नाप्टेगी！निँषी सा ग्रह，लुड，हैउतन्ण，fिभाण के हैटात तेंड गीभ वै नाप्टेठा। टिप्ट वठवे भड

 टबउ भैम गेटे वि निम देले दैठवे मग्वे

उता，क्रैटां डे घूठे，छागे भया ખैटा गी वैस्त गैदे，थत मउताठ टे टिउताम मृट्र।

म्नुत्त पूवम्न वठत थ्रमउब ठरीं，बृठचे ती टिएतं हिं ट्टिव उता टिमटे भवव
 टी मेढा वत मरहा चै। भमीं भाप्त वठरे वां वि माते वाठट्रफाविभा，हेतिभां， पठभमए्लां，ठिवर्गिभां टे मेदब，मैउ， मगेड，मर मिस्थ मड्वाटां टे मेद्व धाम

 युजउत बठतठो।
－उाप्टी हींत fिभ⿸尸


[^0]:    

